दादी प्रकाशमणि जी

यह भारत भूमि धन्य है, जिस पर अनेक महान् हस्तियों का जन्म हुआ। महान् हस्तियों ने बड़े होकर सत्य की वा परमात्मा की खोज की और दुनिया में बहुत बड़ा नाम कमाया। लेकिन इस धरती पर एक ऐसी विभूति ने भी जन्म लिया जिसको स्वयं भगवान ने तलाशा वा परखा और उनका नाम रखा - प्रकाशमणि, जो नाम वास्तविक रूप में खरा उतरा। आगे चलकर वे कहलाईं 'दादी प्रकाशमणि।'

सन् 1936 में, सिन्ध-हैदराबाद में जब ओम् मण्डली की शुरुआत हुई तो एक स्नेहमयी, लगनशील, आज्ञाकारी कुमारी के रूप में उनका पदार्पण हुआ। आते ही उनके हृदय में ईश्वर तथा ईश्वरीय परिवार के प्रति भरपूर प्यार देखा। उनका मन-वचन-कर्म हमेशा विशेषता सम्पन्न रहा, कभी साधारण चाल-चलन की तो झलक भी नहीं आयी। प्यारे बाबा ने भी उनको आते ही टीचर का पदभार संभलवा दिया। छोटे बच्चों की तो वे दिव्य शिक्षिका थीं ही, कुँज भवन में बड़ों के बीच भी टीचर की भूमिका बहुत अच्छी निभायीं।

दादी जी बाबा समान बड़ी दिल वाली थीं

जैसे बाबा की दिल बड़ी थी, सबको खुलकर देना, खिलाना, पिलाना, ख़ुश करना आदि करते थे ऐसे ही दादी जी की भी सबके प्रति बड़ी दिल थी। किसी को कुछ चाहिए होता तो वो माँगने से पहले ही दे देती थीं। समझती थीं कि यह बाबा का बच्चा है, बाबा के घर सो अपने घर में आया है, उसको हर सुविधा मिलनी चाहिए। समझो, आज की दुनिया के हिसाब से कोई साहूकार बाबा के घर में आया, वो अपने घर में कैसे रहता होगा, वो सोचकर ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा देने का प्रयत्न करती थीं। दादी जी किसी मेहमान के आने से पहले ही सारे प्रबन्ध देखती थीं और कराती थीं।

दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था

दादी जी के चेहरे पर सदा रूहानियत और मधुर मुस्कान की झलक बनी रहती थी। दादी जी सर्व के प्रति सदा शुभचिन्तक होने के कारण छोटे-बड़े सबको सम्मान देती थीं। दादी जी के पास सब गुणों का बैलेंस था। जितना नॉलेजफुल थीं, उतना पॉवरफुल थीं। जितना लवफुल, उतना लॉफुल थीं। उन्होंने सबको सदा मर्यादा की लकीर के अन्दर रहना सिखाया। दादी जी अटूट निश्चयबुद्धि थीं जिस कारण श्रीमत को ज्यों-का-त्यों पालन कर बाबा के कदम-पर-कदम रखा। दादी जी जितनी महान् थीं उतनी ही निर्मान थीं। जितनी गंभीर, उतनी रमणीक थीं। जितनी व्यस्त थीं, उतनी मस्त थीं। सर्वगुणों का बैलेंस होने के कारण सदा ब्लिसफुल रहती थीं। ये सब गुण उन्होंने अपनी नेचुरल नेचर में ढाल लिये थे जिस कारण हरेक हल्का हो दादी को अपना दिल दे देता था। उन्होंने हरेक के दिल को जीत लिया जो आज भी बापदादा के साथ दादी सबके दिल में समायी हुई हैं।

मिलनसारिता तो दादी का नेचुरल नेचर था

दादी जी छोटे-बड़े सभी को दिल से प्यार देती भी थीं और लेती भी थीं। सभी को समान दृष्टि से देखना, सदा मुस्कराते रहना, सभी से मिलनसार हो रहने का गुण तो दादी का नेचुरल था।

दादी जी के अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी

कमरे में दादी के दोनों तरफ़ बाबा के चित्र लगे हुए थे। उनका सारा ध्यान बाबा में ही रहा। बाबा के सिवाय कहीं भी - न किसी चीज़ में, न व्यक्ति में, न वैभव में - लगाव-झुकाव था। उनके अन्दर त्याग और वैराग्य की पराकाष्ठा थी। दादी जी हमेशा कहती थीं, सिम्पल रह, सैम्पल बनो। दादी जी कभी भी तड़क-भड़क पसन्द नहीं करती थीं।

दादी जी सादगी की मूरत थीं

यज्ञ में हज़ारों ब्राह्मण भाई-बहनें तथा अनेक वी.आई.पीज़ आते थे। वे हरेक से मिलती थीं। चाहे ३० हज़ार भाई-बहनें भी आ जाते थे, फिर भी लाइन में सभी उनकी दृष्टि का अतीन्द्रिय आनन्द प्राप्त करते थे। हर कार्य करने में उनका उमंग-उत्साह सदा बना रहता था। वे त्याग और सादगी की मूरत थीं। प्यारे बाबा के स्लोगन - जो खिलाओ, जो पहनाओ, जहाँ बिठाओ - इसकी पूर्ण धारणा उनके जीवन में देखी। वे मास्टर पालनहार थीं। एक हज़ार यज्ञ-वत्सों और दस हज़ार निमित्त शिक्षिकाओं सहित सभी को बाप समान पालना देती थीं।

दादी जी के संकल्प अटल और सफल थे

दादी जी ईश्वरीय मर्यादाओं में अटल और हैण्डलिंग करने में महान् थीं। कैसी भी भूली-भटकी आत्मा को प्यार से शिक्षा देकर अपना बना लेती थीं। सारे विश्व में बाबा की प्रत्यक्षता के लिए दादी हमेशा सोचती रहती थीं और बहनों को बुलाकर सेवा के विविध इशारे देती थीं जिसका प्रत्यक्ष फल विभिन्न सेवा के प्रोग्राम्स हैं। दादी जी को विविध वर्गों के लिए समान और स्नेह था। नारी-शक्ति के लिए तो विशेष था जिसको भगवान ने निमित्त बनाया।

मातृ-स्वरूपा दादी जी

विशेष क्लास के दौरान टीचर बहनों को दादी जी कहती थीं कि आप मेरी सखियाँ हो। इतना ऊँचा सम्मान दादी जी देती थीं और पूछती थीं कि आप अपने सेन्टर में ख़ुश हो? कुछ समस्या अगर है तो दादी को चिटकी लिखो या व्यक्तिगत दादी से मिल सकती हो, दादी किसी को कुछ नहीं बतायेगी। उस समय हमें दादी जी, दादी जी नहीं लगती थीं बल्कि अपनी

सगी माँ नज़र आती थीं। दादी भरी सभा में हम सभी के लिए कहतीं कि मेरी सखियों के लिए आइसक्रीम बनानी है। साथ में, हम सभी बहनों के साथ ब्रह्मा भोजन भी करती थीं। दादी हमें कहतीं - गो सून, कम सून (जल्दी जाओ, जल्दी आओ)।

दादी बिना मधुबन सूना-सूना लगता है

आज जबकि साकार रूप में दादी जी नहीं रहीं तो हम बहनों को मधुबन सूना-सूना लगता है और यह भी आभास होता है कि हमारे सिर से कोई शीतल छाया देने वाला वृक्ष हट गया। बरबस आँखें नम हो जाती हैं। इस प्रकार दादी जी चैतन्य देवी माँ स्वरूपा, ममतामयी, त्यागमयी, स्नेहमयी सम्पूर्ण बाप समान पालना देने वाली प्रतिमूर्ति थीं।

दादी जी एक महान् साधिका एवं स्थितप्रज्ञा थीं

मैंने दादी से सीखा कि 'निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी भव' के इस अन्तिम वरदान का स्वरूप कैसे बना जाये। इस वरदान को दादी जी अमृतवेले से रात्रि तक स्थूल, सूक्ष्म दिनचर्या में प्रयोग में लाने का कार्य करती थीं। निराकारी स्थिति का आधार पॉवरफुल अमृतवेला, ये उनके जीवन का स्वरूप हो गया था। निर्विकारी स्थिति का आधार मुरली का गहन चिन्तन है। दादी जी प्रतिदिन रात्रि में और अमृतवेले योग के पश्चात् मुरली अवश्य गहराई से पढ़ती रहीं और सारे दिन में चाहे किसी से पर्सनल मिले या क्लास कराये लेकिन उस दिन की मुरली की धारणा, श्रीमत ज़रूर सभी को पक्का कराती थीं।

दादी जी न केवल कुशल प्रशासिका थीं परन्तु कुशल नेता भी

दादी जी एक कुशल प्रशासिका थीं। उनकी विशाल बुद्धि तथा परखशक्ति असीम थी। वे हरेक के भीतर छिपे हुए गुणों को जाग्रत कर उन्हें सेवा में लगाती थीं। अपनी कुशलता व प्रेम भरी नेतृत्व कला से वे सर्व के दिलों पर राज्य करती थीं।

दादी जी माताओं को बहुत प्रेरणा देती थीं

घर-गृहस्थ में रहने वाली माताओं के प्रति भी दादी जी का बहुत ध्यान रहता था। वे उन्हें विशेष स्नेह-प्यार देती थीं। वे कहा करती थीं, 'हे माताओ, अब जगत्माता, शिव-शक्ति बन विश्व की आत्माओं को परमात्मा का वर्सा दिलाना है। आपका ही गायन है वन्दे मातरम्।

दादी जी सबकी प्रेरणास्रोत थीं

दादी जी की मधुर हँसी अभी तक कानों में गूँजती है। सारा दिन उन में ज्ञान का चिन्तन चलता था। ज्ञान-रंगों से चित्रांकित उनकी वो भोली मुस्कराहट, योग-तपस्या की प्रकाश-रश्मियाँ बिखेरते उनके निर्मल नयनों की हमारे दिल पर गहरी छाप लगी है। एक बार जो भी दादी जी से मिला, उसके हृदय में दादी जी की अमिट छाप लग जाती थी। उनके प्यार

और मार्गदर्शन ने हम सबको आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसर किया।

दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं

दादी जी का चेहरा उनके मन का दर्पण था। पग-पग पर सद्भावना, श्रेष्ठ विचार उनसे हमें मिलते थे। सेवा के लिए दादी जी हमारे में बहुत उमंग, उत्साह और शक्ति भरती थीं। वी.आई.पी. और नये भाई-बहनों को लेकर जब हम शिविर में जाते थे तो बहुत प्यार से उनको शिक्षा देती थीं। उन भाई-बहनों को भी दादी जी को देखकर अलौकिक अनुभूतियाँ होती थीं।

दादी जी दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका थीं

दादी जी का आदर्श जीवन देखकर लगता था कि जीवन हो तो ऐसा हो। प्रेरणा आती थी कि हमें भी ऐसी ही गॉडली स्टुडेण्ड लाइफ रखनी है। उन्हें देखकर सब में अलौकिक ऊर्जा का प्रवाह बहता था। दादी जी दैवी फुलवाड़ी की महामल्लिका थीं, उनके संग में सब झूम उठते थे।

दादी जी स्वच्छता और सादगी की अवतार थीं

एक बार काठमाण्डू (नेपाल) में विश्व हिन्दू महासम्मेलन हुआ था। उस समय दादी जी नेपाल में आयीं थीं। वहाँ बहुत सारे सन्त, महन्त बड़े-बड़े महामण्डलेश्वर देश-विदेश से आये हुए थे। उस प्रोग्राम में दादी जी को भाषण करना था परन्तु स्टेज बहुत बड़ी थी। दादी जी साधारण चौकी पर बैठी थी जिस पर एक पतली चादर थी, दरी भी नहीं थी। हमने दादी जी से पूछा, दादी, आप कैसे बैठेंगी? आपको मुश्किल होगी। तो दादी जी ने कहा, मुझे आज इन महामण्डलेश्वरों को बाबा का सन्देश देना है, मुझे इतनी ख़ुशी है कि पट पर बैठकर भी इन्हें सन्देश देना है। इतना उमंग-उत्साह था। एक घण्टे तक भाषण किया। बाद में हमने पूछा, दादी जी, कोई दिक्कत तो नहीं हुई? तो दादी जी ने कहा, नहीं। आज एक घण्टा बाबा ने बोला है, दादी ने नहीं। इतनी देही-अभिमानी थीं। श्वासों श्वास बाप में समायी हुई, स्वच्छता और सादगी की अवतार थीं।

दादी जी को श्वेत वस्त्रों में ही रहना और सबको रखना पसन्द था

आदरणीया दादी जी को श्वेत वस्त्रों में ही रहना और सबको रखना पसन्द था। रसोई घर में श्वेत वस्त्र सब्जी आदि से गंदे होते थे, अतः एक बार सन्तरी दादी ने दादी जी से पूछा कि कपड़े रसोई में जल्दी गन्दे हो जाते हैं, खाना बनाने वाली बहन को रंगीन गाउन दे दूँ? इस पर दादी जी ने कहा कि भले ही दिन में तीन बार ड्रेस बदलनी पड़े लेकिन रंगीन गाउन नहीं। ईश्वरीय क्लास में भी रंगीन ड्रेस पहना हुआ कोई भी उन्हें अच्छा नहीं लगता था। कहती थीं, यह फ़रिश्तों की सभा है और फ़रिश्ते धवल हुआ करते हैं, रंगीन नहीं। उनसे जब किसी ने पूछा कि आप कौन-सी देवी हो तो उन्होंने कहा था कि मैं वैष्णो देवी हूँ। सचमुच आप सम्पूर्ण वैष्णव थीं।

शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ

दादी जी की यह विशेषता थी कि मधुबन में रात को 9 से 10 बजे के दरम्यान सभी टीचर्स बहनों को अपने कमरे में बुलाकर स्वयं बाबा की मुरली पढ़कर सुनाती थीं। इससे हमारा विचार सागर-मंथन चलता था, ज्ञान

का विकास हो जाता था। हर दिन सुबह दादी जी के कमरे में उन्हें गुड मार्निंग करने और रात को गुड नाइट करने जाते थे। दादी जी से मिलते ही ख़ुशी होती थी, एक विशेष शक्ति का संचार होता था, आत्मा तेज:पुँज बन जाती थी। दादी द्वारा साकार पिताश्री ब्रह्मा बाबा से ही मिलन मनाया - ऐसी अनुभूति होती थी। साकार में स्वयं पिताश्री ब्रह्मा बाबा ही उतरकर आये हैं- ऐसा प्रतीत होता था। ऐसी थी हमारी शक्ति स्वरूपिणी दादी माँ!

उनका हर कर्म सर्व ब्राह्मणों के लिए अनुकरणीय था

सादगी, सरलता और सात्विकता की साक्षात् मूरत प्यारी दादी जी को, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान की मुखिया होते हुए भी अहंभाव छू भी नहीं पाया। उनका हर कर्म सर्व ब्राह्मणों के लिए अनुकरणीय था। दादी जी का पूरे जीवनकाल का हर क्षण सेवा में समर्पित था। छोटा-बड़ा चाहे कोई भी हो, सबकी सेवा में दिल व जान से तत्पर रहती थीं। बाबा के बच्चे संसार के आगे उदाहरण स्वरूप बनें - यह उनका संकल्प रहता था। यज्ञ के लाखों ब्राह्मण होते हुए भी उनको हरेक बच्चे का पूरा-पूरा ध्यान रहता था।

संतों के प्रति दादी जी को अगाध प्यार था

सभी संत, बाबा के घर में आये - इसी चाहना से हर साल दादी जी संत-सम्मेलन आयोजित करती थीं और स्वयं उनके हर प्रोग्राम व व्यवस्था का ध्यान रखती थीं कि किसी भी तरह से उन्हें कोई असुविधा न हो। इतना आदर-सम्मान उनको देती थीं कि आज भी संत बड़े प्यार से दादी माँ को याद करते हैं।

उनको अपने पद का रिंचक मात्र भी अभिमान नहीं था

सन् 1983 की बात है। वाराणसी से एक महामंडलेश्वर जी मधुबन पधारे थे। उस समय प्रात: क्लास में उनका आगमन हुआ। दादी जी क्लास करा रही थीं। महामंडलेश्वर जी का परिचय देने के लिए शीलू बहन मंच पर आयी। उस समय एक संदल पर महामंडलेश्वर जी विराजमान थे और एक संदल पर स्वयं दादी जी। दादी जी ने उसी समय शीलू बहन को कहा कि आप मेरे पास आकर बैठो। शीलू बहन ने दादी जी के पास बैठकर महामंडलेश्वर जी का परिचय दिया। इसके बाद महामंडलेश्वर जी ने अपना अनुभव सुनाया और अन्त में कहा कि दादी जी वास्तव में बहुत ही निर्मानचित्त हैं। उन्होंने कहा कि मेरे आश्रम में कोई भी शिष्य मेरे पास बैठ नहीं सकता और ना ही पास से निकल सकता है परन्तु दादी जी तो इतनी महान् हैं कि बहन जी को अपने पास ही बैठा लिया। साथ ही महामंडलेश्वर जी ने कहा कि दादी जी बहुत ही साधारण श्वेत वस्त्र पहनती हैं और हम तो कीमती रेशम के वस्त्र पहनते हैं।

दादी जी क्रोधमुक्त, प्रसन्नचित्त थीं

जब मैं मुंबई में दादी के पास रहती थीं, मैंने देखा, दादी जी बहुत शान्त और प्रेम की मूर्ति हैं। एक दिन रात्रि को मैंने दादी जी से पूछा, दादी जी, क्रोध नहीं आये - इसकी कोई युक्ति बताइये। दादी जी ने कहा, राजा की तरह रहो, राजा अपने ही ख़्यालों में मस्त रहता है, इधर-उधर नहीं देखता। अपने ही लक्ष्य को लेकर

चलो, बस क्रोध मिट जायेगा। दूसरा, उन्होंने कहा कि आगे बढ़ने के लिए सहनशक्ति हो, क्यू में आप पीछे से आगे निकल जाओ तो आगे वाले आपको बोलेंगे ही, अगर आप सहन कर लेगी तो आगे ही रहोगी। यह शक्ति धारण करने से मीठे बन जायेंगे।

दादी जी ईश्वर की दिव्य प्रतिकृति थीं

उन्होंने किसी भी कृत्य को 'मैं' शब्द नहीं दिया। मगरूरियत का मुजाहिरा नहीं हुआ। वे विनम्रता का साकार रूप थीं। हमेशा कहती थीं, बाबा करन-करावनहार है।

संकट–विमोचक दादी जी

दादी जी में दया, करुणा, क्षमा आदि गुण ऐसे समाये हुए थे कि वे सदैव संकट-मोचक बन समाधान स्वरूप बन जातीं, तपते मन को शीतल कर जातीं। जब कभी प्रकृति विद्रुप बनकर कष्ट देने लगती, राजस्थान की मरुभूमि के मूक जानवर तड़प रहे होते तो ऐसे समय पर दादी जी ट्रक भरवा-भरवाकर चारा पहुँचातीं। कच्छ-भुज के भूकम्प में मेडिकल रिलीफ़ ट्रकों में भरकर - अन्न, जल व अन्य आवश्यक सुविधायें - ब्रह्मावत्सों द्वारा भिजवायीं। गुजरात ही नहीं वरन् हर स्थान पर सक्रिय सहयोग किया, बाढ़ पीड़ितों को भी पार लगाया।

दादी हँसाती, बहलाती भी थीं

एक बार मैं दादी जी के साथ सैर करने गयी थी, तो दादी जी ने पूछा, तुमको किसकी राजधानी में जाना है - राधे की या कृष्ण की? मैंने कहा, दादी जी, मुझे तो मालूम नहीं, किसकी राजधानी में आऊँगी। दादी ने पूछा, तुम मम्मा से ज़्यादा प्यार करती हो या बाबा से? मैंने कहा, दोनों से। तो दादी ने कहा, दिल का सच्चा प्यार तो एक से होता है। अब बताओ, किस से दिल का नज़दीकी प्यार है? मैंने कहा, बाबा से ज़्यादा प्यार है। तो दादी ने कहा, तुम फिर कृष्ण की राजधानी में आओगी। दादी ऐसे-ऐसे हँसाती, बहलाती भी थीं।

दादी जी में पिता, माता एवं शिक्षक के सर्वगुण विराजमान थे

पिताश्री के अव्यक्त होने के पश्चात् संस्था के कार्यभार को दादी जी ने बख़ूबी निभाया। पिता, माता एवं शिक्षक के सर्वगुण दादी जी में विराजमान थे। पिता रूप से उन्होंने ईश्वरीय सेवा के अनेक कार्य एवं योजनाओं को रचा जिसके कारण देश-विदेश में अनेक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए एवं संस्था का विकास हुआ। माता रूप से उन्होंने सबको हर प्रकार से रूहानी पालना दी एवं गुणवान बनाया और शिक्षक रूप से आत्माओं को ज्ञान-योग से श्रृंगारित करती रहीं एवं सुसंस्कार धारण कराती रहीं।

उनका जीवन चमकती हुई एक मणि जैसा था

दादी जी का दिल सरल, स्वच्छ, साफ़ और विशाल था। दादी जी दैवी गुणों की खान थीं। वे इस साकार शरीर में ही फ़रिश्ता नज़र आती थीं। दादी जी हमेशा सबकी भलाई के बारे में ही सोचती थीं। समस्त विश्व की आत्माओं को कैसे ईश्वर का परिचय दें, उनको कैसे जीवन के दु:ख-दर्द से मुक्त करें, सबको राजयोग का मार्ग दिखाकर कैसे उनका जीवन सुखमय बनायें - यही उनकी अभिलाषा होती थी। उनके विचार, उनके निर्णय सब पारदर्शी होते थे। उनको देखते ही हरेक को यह आभास होता था कि ये एक देवी हैं, शक्ति हैं, महान् तथा वरदानी माँ हैं। उनका जीवन चमकती हुई एक मणि जैसा था, प्रकाशमय डायमण्ड जैसे था। उनके सम्बन्ध में

आने वाला हर व्यक्ति यह महसूस करता था कि मैं भी इन जैसा बनूँ, इन जैसा सोचूँ, इन जैसे बात करूँ, इन जैसे कर्म करूँ, मैं भी अपने जीवन को इन जैसे अलौकिक जीवन में परिवर्तन करूँ।

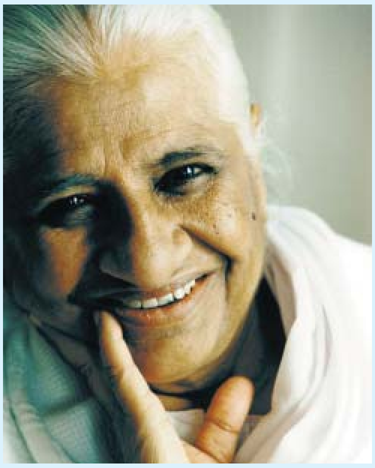

दादी जी अलौकिक मुस्कान की धनी थीं

एक बार धीर, गंभीर और हंस चाल चलती हुई दादी प्रकाशमणी भोलेनाथ के भण्डारे की ओर चली आ रही थीं, जैसे ही सबने दादी जी को देखा, उनकी अलौकिक मुस्कान ने चहुँ ओर मानो ख़ुशी का साम्राज्य ही स्थापित कर दिया। सभी दौड़कर उनके समीप आ गये और वातावरण में हल्कापन छा गया। ऐसी थीं दादी हमारी, जो एक विशाल परिवार की मुखिया और ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रमुख होते हुए भी अति महान् थीं। बड़ी होने के नाते उन्हें सबको प्यार भी देना होता था और प्रशासन को सम्भालते हुए, नियमों का पालन भी कराना होता था। दोनों का अद्‌भुत समन्वय था उनके जीवन में।

दादी जी के अंग–अंग से पवित्रता के वायब्रेशन्स निकलते थे

वे अति पवित्र व निर्मल थीं। एक बार सन्त सम्मेलन में जब वे स्वयं महामण्डलेश्वरों को मेडिटेशन हॉल दिखाने जा रहीं थीं, तो एक महात्मा ने उनकी अँगुली पकड़ ली और साथ चलने लगे। बाद में उन्होंने अपना अनुभव सुनाया कि दादी परम पवित्र हैं, उनके हाथ से पवित्र वायब्रेशन्स आ रहे थे। वे स्वयं भी अपना अनुभव सुनाया करती थीं कि युवाकाल में भी किसी देहधारी की ओर उनका आकर्षण नहीं हुआ। साथ में वे यह भी कहती थीं कि जीवन में उन्होंने कभी झूठ नहीं बोला। यह विश्वास योग्य है क्योंकि जहाँ सम्पूर्ण पवित्रता है, वहाँ सम्पूर्ण सत्यता भी है।

दादी जी अपने सुख से ज़्यादा दूसरों के सुखों का ध्यान रखती थीं

उनके निरहंकारी होने के तो प्रतिदिन दृश्य देखने को मिलते थे। उनमें यह भान ही नहीं था कि वे चीफ हैं। वे तो इसे अपना परिवार मानती थीं। अपने छोटे-छोटे काम वे स्वयं करती थीं और जब वे मुंबई में रहती थीं तो एक ऊँची चारपाई के नीचे सोती थीं क्योंकि ऊपर एक बुजुर्ग बीमार दादी सोती थी। यद्यपि वे मुंबई के सभी सेवाकेन्द्रों की इंचार्ज थीं परन्तु अपने सुख से ज़्यादा वे दूसरों के सुखों का ध्यान रखती थीं। सदा ही उनके मुख पर रहता था कि बाबा ही सब-कुछ कर रहा है। मैंने यह किया, नहीं, बाबा ने किया। ये उनकी गहन अनुभूति थी, इसलिए निमित्त भाव उनकी नेचुरल स्थिति बन गया था।

दादी जी में राजाई संस्कार थे

दादीजी में राजाई संस्कार थे। वे 20,000 की सभा में भी पूछती थीं कि बोलो, क्या खाओगे? अरे, बाबा के घर में बाबा के इतने बच्चे आये हैं, बोलो-बोलो क्या खाओगे? उनकी इन मातृभावनाओं को सभी आश्चर्यवत् होकर देखने लगते थे। वे सदा ही पूछती थीं, सर्दी बहुत है, सबके पास गरम कपड़े हैं? कुछ भी चाहिए तो माँग लेना, लज्जा नहीं करना, भोलेनाथ बाबा के भण्डारे भरपूर हैं। खिलाने-पिलाने में उदारता, सौग़ात देने में उदारता, सम्मेलनों में उदारता, सेवा में ख़र्च करने में उदारता - ये उनके बड़े रॉयल संस्कार थे। जब कोई बीमार हो जाता था, तो वे उसे स्वयं देखने जाती थीं। किस-किस की तबीयत ख़राब है, डॉक्टर से जानकारी लेती थीं। सभी को फल मिल रहे हैं? दवाइयाँ मिल रही हैं? कोई सेवा करने वाला साथ है? इन सब बातों का ध्यान वे

स्वयं भी रखती थीं और सबको कहती थीं कि सब एक-दूसरे के मित्र बन जाओ।

दादी जी कुमारों की कुमारका थीं

वे कुमारों को बहुत दिल से सच्चा प्यार देती थीं, इसलिए जब भी कोई छोटे-से-छोटा कार्य हो या बड़ा, दादी जी को किसी ने भी कभी ना नहीं कहा। दादी जी के इशारे पर कुमारों का ग्रुप, बहनों का ग्रुप फौरन सेवा के लिए हाज़िर हो जाता। चाहे कोयले उठाने हों, चाहे धोबीघाट की सेवा हो, चाहे अनाज की बोरियाँ उठानी हों, चाहे मकान बनाने में मज़दूरों वाला कार्य हो, बर्तन माँजने हों, घर की सफ़ाई करनी हो - हर कार्य में दादी जी सदा आगे रहीं और सबमें उमंग-उत्साह भरते यज्ञ के छोटे-से रूप को आज इतना विशाल किया - यह आदरणीया दादी जी के कुशल प्रशासन की ही कमाल है।

दादी जी की स्मरण-शक्ति बहुत तेज थी

दादी जी को यज्ञ की एक-एक वस्तु की, हर एक विभाग की पूरी जानकारी रहती थी, हर एक को नाम सहित सम्बोधन करके बुलातीं, उनकी स्मरण-शक्ति इतनी तेज़ थी, जो कभी किसी का नाम वे भूलती नहीं थीं। हर एक छोटे-बड़े सेवाकेन्द्र का पोतामेल (हिसाब-किताब) दादी जी स्वयं देखतीं, कितना ख़र्चा है, कितनी आमदनी है, दादी जी के पास पूरा हिसाब था। यज्ञ के हर भाई-बहन का, हर सेवाकेन्द्र का वे व्यक्तिगत ध्यान रखतीं।

दादी के विचार मशाल का काम कर रहे हैं

दादी जी से किसी भी अजनबी को मिलते ही सहज ही यह आभास होने लगता था कि वे किस प्रकार विभिन्न धर्मों और संस्कृति का आचरण करने वालों को विश्व शान्ति एवं मानवीय एकता के लिए कार्य करने को प्रेरित करती हैं। उनका मानना था कि वर्तमान परिवेश में परिस्थितियों की मांग है कि दैहिक धर्मों को भूलकर एक आत्मिक स्वधर्म - शान्ति के धर्म - में टिका जायें। जिसका अर्थ बताते वे कहती थीं कि स्वधर्म का तात्पर्य - हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि से नहीं बल्कि सही अर्थ है, हे आत्मन्, अपने अनादि शान्ति के धर्म में स्थित रहो जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् की पुनीत भावना स्वतः ही समाज में व्याप्त होगी। वे अपने आप में एक मिसाल थीं, उनके विचार अज्ञान तिमिर में भटकती, तड़पती, पथभ्रष्ट आत्माओं के लिए एक मशाल के रूप में मार्गदर्शक बनकर अनेकों की टिमटिमाती जीवन ज्योति को पुनः प्रदीप्त करने के प्रेरणा स्रोत हैं।

हमारी दादी, विश्व की दादी

दादी हमारी त्याग, तपस्या व शुभ-भावनाओं से भरपूर, अनेक सद्‌गुणों की साक्षात् मूरत, सब पर स्नेह के पुष्पों की वर्षा करने वाली, अनेकों के जीवन का सहारा व दुआओं से पालने वाली। ऐसी महान् आत्मा की छत्रछाया में पलकर यह ईश्वरीय बग़िया ख़ूब फली-फूली। उनका अभाव तो आज भी अनुभव होता है। उनकी दिव्यता व शालीनता सभी पर अमिट छाप छोड़ती थी। उनके पवित्र प्रेम को पाकर सभी कह उठते थे - हमारी दादी, विश्व की दादी।

***